SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 3

भूमंडलीकृत विश्व का बनना

भाग - 8

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अनौपनिवेशीकरण और स्वतंत्रता :-

- दूसरा विश्व युद्ध खत्म होने के बाद भी विश्व का एक बहुत बड़ा भाग यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन था।
- अगले दो दशकों में एशिया और अफ्रीका के ज़्यादातर उपनिवेश स्वतंत्र स्वाधीन राष्ट्र बन चुके थे।
- लेकिन ये सभी देश गरीबी व संसाधनों की कमी से जूझ रहे थे।
- उनकी अर्थव्यवस्थाएँ लंबे समय तक अधीन रहने के कारण अस्त-व्यस्त हो चुकी थी।
- I.M.F. और विश्व बैंक का गठन तो औद्योगिक देशों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही किया गया था।
- ये भूतपूर्व उपनिवेशों में गरीबी की समस्या और विकास की कमी से निपटने में दक्ष नहीं थे।
- लेकिन जिस प्रकार यूरोप और जापान ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्गठन किया था उसके कारण ये देश I.M.F. और विश्व बैंक पर निर्भर भी नहीं थे।



- तब 1950 के दशक के अंत में जाकर I.M.F. तथा विश्व बैंक ने विकासशील देशों पर ध्यान देना प्रारम्भ किया।
- विडंबना की बात यह थी कि वे राष्ट्र जो उपनिवेशों के रूप में पश्चिमी साम्राज्यों के अधीन रहे थे। उनको अब स्वतंत्र होने के बाद भी अपने देश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की मदद लेनी पड़ी जिन पर भूतपूर्व औपनिवेशिक शक्तियों का ही नियंत्रण था।

- बहुत साल बीत जाने के बाद भी बहुत सारे नव-स्वाधीन राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाओं पर अब भी औपनिवेशिक शक्तियों का ही नियंत्रण था।
- जो देश ब्रिटेन और फ़्रांस के उपनिवेश रह चुके थे। वहाँ पर अब भी उनके महत्त्वपूर्ण संसाधनों, जैसे खनिज संपदा पर ब्रिटेन और फ़्रांस की कंपनियों का ही नियंत्रण था और वे इस नियंत्रण को छोड़ने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं थे।





- कई बार अमेरिका जैसे अन्य शक्तिशाली देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी विकासशील देशों के प्राकृतिक संसाधनों का बहुत कम कीमत पर दोहन करने लगती थीं।

बहुराष्ट्रीय कंपनी :- एक साथ बहुत सारे देशों में व्यवसाय करने वाली कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनी कहा जाता है। (मल्टी-नेशनल कॉर्पोरेशन)

- शुरूआती बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना 1920 के दशक में की गई थी।

- 1950 व 1960 के दशकों में जब अमेरिकी व्यवसाय दुनिया भर में फैलते जा रहे थे तथा साथ ही पश्चिमी यूरोप व जापान भी विश्वयुद्ध के प्रभाव से बाहर निकलते हुए शक्तिशाली राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर थे उस समय ऐसी बहुत सारी नई कंपनियां सामने आई।

- इसका एक कारण यह भी था कि उस समय ज्यादातर सरकारें बाहर से आने वाली चीजों पर भारी आयात शुल्क वसूल करती थीं जिसके कारण इन बड़ी कंपनियों को अपने संयंत्र उन्हीं देशों में लगाने पड़ते थे जहां वे अपना माल बेचना चाहती थीं।
- उन्हें 'घरेलू उत्पादकों' के रूप में काम करना पड़ता था।
- दूसरी ओर ज़्यादातर विकासशील देशों को पचास और साठ के दशक में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की तेज प्रगति से कोई लाभ नहीं हुआ।
- इस समस्या को देखते हुए उन्होंने एक नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली (New International Economic Order–NIEO) विकसित करने के लिए आवाज़ उठाई।
- ये G-77 (समूह–77) के रूप में संगठित हो गए।

ब्रेटन वुड्स का समापन और 'वैश्वीकरण' की शुरुआत :-

- सालों से हो रही तेज़ वृद्धि के बावजूद युद्धोत्तर दुनिया में सब कुछ सही नहीं चल रहा था।
- विदेशों में भारी लागत के कारण अमेरिका की वित्तीय और प्रतिस्पर्धी क्षमता कमज़ोर हो गयी थी।
- अमेरिकी डॉलर अब दुनिया की प्रधान मुद्रा के रूप में पहले जितना सम्मानित नहीं रह गया था।
- सोने की तुलना में डॉलर की कीमत गिरने लगी थी।
- इसके साथ स्थिर विनिमय दर की व्यवस्था विफल हो गई तथा अस्थिर विनिमय दर की व्यवस्था शुरू की गई थी।

- 1970 के दशक के मध्य तक विकासशील देश कर्ज़ और विकास संबंधी सहायता के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की शरण ले सकते थे।
- लेकिन अब उन्हें इन संस्थानों से कर्ज़ न लेने के लिए बाध्य किया जाने लगा।
- इसलिए इन विकासशील देशों में समय-समय पर क़र्ज़ संकट पैदा होने लगा।
- इससे आय में गिरावट आती थी और गरीबी बढ़ने लगती थी।
- अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में यह समस्या सर्वाधिक थी।
- औद्योगिक विश्व भी बेरोज़गारी की समस्या में फँसने लगा था।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी ऐसे देशों में उत्पादन करने लगीं जहाँ वेतन कम थे।
- चीन 1949 की क्रांति के बाद विश्व अर्थव्यवस्था से अलग-थलग ही था।
- परंतु चीन में नयी आर्थिक नीतियों और सोवियत खेमे के बिखराव के बाद बहुत सारे देश दोबारा विश्व अर्थव्यवस्था का अंग बन गए।

- चीन में वेतन अन्य देशों की तुलना में कम थे। अत: बहुत सारी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने वहाँ जमकर निवेश करना शुरू कर दिया।
- इसलिए हमारे ज़्यादातर टेलीविज़न, मोबाइल फोन और खिलौने चीन में बने होते हैं।
- इसका कारण चीन में अल्प लागत अर्थव्यवस्था वहाँ के कम वेतनों का नतीजा है।
- उद्योगों को कम वेतन वाले देशों में ले जाने से व्यापार और पूँजी प्रवाह की दिशा ही बदल गई जिससे भारत, चीन और ब्राज़ील की अर्थव्यवस्थाओं में भारी बदलाव आने लगे हैं।
- दुनिया का आर्थिक भूगोल पूरी तरह से बदल चुका है।

1. सत्रहवीं सदी से पहले होने वाले आदान–प्रदान के दो उदाहरण दीजिए। एक उदाहरण एशिया से और एक उदाहरण अमेरिका महाद्वीपों के बारे में चुनें।

उत्तर : एशिया महाद्वीप :–

- प्राचीन काल में एशिया महाद्वीप के दुनिया के दूर–दूर के भागों से व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संपर्क सिल्क मार्ग के द्वारा थे।
- इस मार्ग से 'चीनी रेशम' जाता था इसलिए इसका नाम सिल्क मार्ग पड़ा। जो चीन से पश्चिमी देशों को जाता था।

- ये सिल्क मार्ग बहुत सारे थे।
- ये मार्ग समुद्र व जमीन दोनों से गुजरते थे।
- ये ना केवल एशिया के देशों को बल्कि एशिया को यूरोप व उत्तरी अफ्रीका से जोड़ते थे।
- इसी रास्ते से चीनी पॉटरी जाती थी।
- इसी मार्ग से भारत व दक्षिण पूर्व एशिया के कपड़े व मसाले दुनिया के दूसरे भागों में पहुंचते थे।

- वापसी में सोने–चांदी जैसी कीमती धातुऐं यूरोप से एशिया पहुंचती थी।
- शुरूआती काल में ईसाई मिशनरी भी इसी मार्ग से एशिया में आते होंगे।
- कुछ सदी बाद मुस्लिम धर्मोपदेशक भी इसी रास्ते से दुनिया में फैले।
- इन सबसे बहुत पहले पूर्वी भारत में उपजा बौद्ध–धर्म भी इसी सिल्क मार्ग की विविध शाखाओं से कई दिशाओं में फैल चुका था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अमेरिका महाद्वीप :-

- लगभग 500 साल पहले हमारे पूर्वजों के पास – आलू, सोयाबीन, मूंगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद जैसे खाद्य पदार्थ नहीं थे।
- ये खाद्य पदार्थ यूरोप और एशिया में तब आये जब क्रिस्टोफर – कोलबंस गलती से अमेरिका महाद्वीप पहुंच गया।
- दरअसल हमारे बहुत सारे खाद्य पदार्थ अमेरिका के मूल निवासियों से हमारे पास आये हैं।

2. बताऐं कि पूर्व आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भू-भागों के उपनिवेशीकरण में किस प्रकार मदद दी ?

उत्तर : 16वीं सदी के मध्य तक आते-आते स्पेनिश सेनाओं की विजय का सिलसिला शुरू हो चुका था।

- उन्होंने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया था।
- यूरोपीय सेनाऐं केवल अपनी सैनिक ताकत के दम पर नहीं जीतती थी।

- स्पेन के विजेताओं के पास कोई भी परंपरागत किस्म का सैनिक हथियार भी नहीं था।
- उनके पास तो चेचक जैसा कीटाणुरूपी हथियार था जो स्पेनिश सैनिकों ओर अफसरों के साथ वहां जा पहुंचा था।
- लाखों सालों से दुनिया से अलग-थलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की रोग प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी।
- फलस्वरूप इस नये स्थान पर चेचक बहुत मारक साबित हुई।

- एक बार संक्रमण शुरू होने के बाद तो यह बीमारी पूरे महाद्वीप में फैल गई।
- जहां यूरोपीय लोग नहीं पहुंचे थे वहां के लोग भी इसकी चपेट में आने लगे।
- इसने पूरे के पूरे समुदायों को खत्म कर दिया।
- इस प्रकार से यूरोपीय घुसपैठियों की जीत का रास्ता आसान होता चला गया।
- बंदूकों को तो खरीद कर या छीन कर हमलावरों के खिलाफ भी इस्तेमाल किया जा सकता है। पर चेचक जैसी बीमारी के मामले में तो ऐसा नहीं किया जा सकता था।

- यद्यपि यूरोपीय हमलावरों के पास तो चेचक से बचाव का तरीका भी था तथा उनके शरीर में तो रोग प्रतिरोधी क्षमता भी विकसित हो चुकी थी।

3. निम्नलिखित के प्रभावों की व्याख्या करते हुए संक्षिप्त टिप्पणियां लिखें –

(क) कॉर्न लॉ के समाप्त करने के बारे में ब्रिटिश सरकार का फैसला।

उत्तर :

- 18वीं सदी के आखिरी दशकों में ब्रिटेन के बड़े भू–स्वामियों के दबाव में सरकार ने मक्का के आयात पर पाबंदी लगादी थी।
- मक्का पर पाबंदी लगाये जाने वाले इस कानून को 'कॉर्न–लॉ' कहा जाता था।

- तब खाद्य-पदार्थों की ऊंची कीमतों से परेशान उद्योगपतियों और शहरी बाशिदों ने सरकार को कॉर्न लॉ को फौरन समाप्त करने को मजबूर कर दिया।
- कॉन लॉ के समाप्त हो जाने के बाद ब्रिटेन की सरकार बहुत कम कीमत पर खाद्य पदार्थों का आयात करने लगी।
- इन आयतित खाद्य पदार्थों की कीमत ब्रिटेन में उत्पादित खाद्य पदार्थों की कीमत से भी बहुत कम होती थी।
- फलस्वरूप ब्रिटेन के किसानों की हालत बिगड़ने लगी।

- वे आयतित माल की कीमतों का मुकाबला नहीं कर सकते थे।
- विशाल भू-भाग पर खेती बंद हो गई।
- हजारों लोग बेरोजगार हो गए।
- लोग गाँवों को छोड़कर शहरों में या दूसरे देशों में जाने लगे।

(ब) अफ्रीका में रिंडरपेस्ट का आना :-

उत्तर -

- अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट (मवेशी प्लेग) नामक बीमारी तेजी से फैल गई।
- अफ्रीका के पूर्वी हिस्से में एरिट्रिया पर इटली ने आक्रमण किया था।

- इन इतावली सैनिकों का पेट भरने के लिए एशियाई देशों से जानवर लाये जाते थे।
- यह बीमारी उन्हीं एशियाई देशों के जानवरों के द्वारा यहां पहुंची थी।
- अफ्रीका के पूर्वी हिस्से से दाखिल होकर यह बीमारी 'जंगल की आग' की तरह 1892 में पश्चिम में अटलांटिक तट तक जा पहुंची।
- 5 साल बाद यह अफ्रीका के धुर दक्षिणी भाग 'केप' तक जा पहुंची।
- रिंडरपेस्ट ने अपने रास्ते में आने वाले 90 प्रतिशत मवेशियों को मौत की नींद सुला दिया था।

- पशुओं के खत्म हो जाने के बाद तो अफ्रीकियों के रोजी–रोटी के साधन ही खत्म हो गये।
- इसके बाद बागान मालिकों, खान मालिकों तथा औपनिवशिक सरकारों ने बचे खुचे पशु भी अपने कब्जे में ले लिये।
- इससे यूरोपीय ताकतों की सत्ता मजबूत हो गई तथा अफ्रीकियों को श्रम बाजार में ढकेलना आसान हो गया।
- इस प्रकार से यूरोपीय ताकतों को अफ्रीका को गुलाम बनाने का बेहतरीन मौका हाथ लग गया था।

(स) विश्वयुद्ध के कारण यूरोप में कामकाजी उम्र के लोगों की मौत :-

उत्तर -

- विश्वयुद्ध के लिए दुनियाभर से असंख्य सिपाहियों की भर्ती करके रेलगाड़ियों व विशाल जलपोतों में भरकर युद्ध के मोर्चों पर ले जाया गया।
- युद्ध में 90 लाख से ज्यादा लोग मारे गये और 2 करोड़ लोग घायल हुए।
- मृतकों और घायलों में ज्यादातर कामकाजी उम्र के लोग थे।

- इस युद्ध के बाद यूरोप में कामकाजी उम्र के लोगों की संख्या बहुत कम रह गई थी।
- पुरूष जब युद्ध के मोर्चे पर जाने लगे तो महिलाओं ने उनके काम संभाले।
- महिलाओं को घर से बाहर आकर वे काम करने पड़े जिन्हें अभी तक पुरूषों का ही काम माना जाता था।
- अतः समाजों में बदलाव आया।

(द) भारतीय अर्थव्यवस्था पर महामंदी का प्रभाव :-

उत्तर –

- महामंदी के समय भारत एक उपनिवेश था तथा वह कृषि वस्तुओं का निर्यातक और तैयार माल का आयातक बन चुका था।
- महामंदी ने भारतीय व्यापार को फौरन प्रभावित किया।
- 1928–1934 के बीच देश के आयात–निर्यात घट कर आधे रह गये थे।
- जब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतें गिरने लगीं तो यहां भी कीमतें नीचे आ गई।

- 1928–1934 के बीच भारत में गेहूं की कीमत 50 प्रतिशत गिर गई थीं।

- शहरी निवासियों के मुकाबले किसानों और काश्तकारों को ज्यादा नुकसान हुआ।
- यद्यपि कृषि उत्पादों की कीमतें तेजी से गिरीं। लेकिन सरकार ने लगान वसूली में छूट देने से साफ इन्कार कर दिया।
- सबसे बुरी मार उन काश्तकारों पर पड़ी जो विश्व बाजार के लिए उपज पैदा करते थे।

उदाहरण :- बंगाल के जूट/पटसन उगाने वाले किसानों को पटसन की कीमतों में 60 प्रतिशत से भी ज्यादा कमी हो जाने से भारी नुकसान हुआ।

- जिन काश्तकारों ने दिन फिरने की उम्मीद में उपज बढ़ाने के लिए कर्जे ले रखे थे अब उपज के सही दाम न मिलने के कारण हालत खराब हो गई थी।
- वे दिनोंदिन कर्जे में डूबते जा रहे थे।
- खर्चे ज्यादा थे इस चक्कर में उनकी बचत भी खत्म हो चुकी थी।

- जमीन सूदखोरों के पास गिरवी पड़ी थी, घर के गहने जेवर भी बिक चुके थे।
- यह मंदी शहरी भारत में इतनी दुखदायी नहीं थी।

  शहरों में ऐसे लोग जिनकी आय निश्चित थी उन पर इसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा।

  जैसे – वेतनभोगी कर्मचारी।
- राष्ट्रवादी खेमे के दबाव में उद्योगों की रक्षा के लिए आयतित पदार्थों पर सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया था।
- इससे औद्योगिक क्षेत्र में भी निवेश में तेजी आई।

(ड.) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अपने उत्पादन को एशियाई देशों में स्थानांतरित करने का फैसला।

उत्तर –

- 1970 के दशक के आखिरी वर्षों से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एशिया के ऐसे देशों में उत्पादन करने लगीं जहां वेतन कम थे।
- चीन में वेतन अन्य देशों की तुलना में कम थे। अतः बहुत सारी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चीन में जमकर निवेश किया।
- इसलिए हमारे टेलीविजन, मोबाइल फोन तथा खिलौने चीन के बने होते हैं।

- इसका कारण चीन में अल्प-लागत अर्थव्यवस्था तथा वहां के कम वेतनों का नतीजा है।
- उद्योगों को कम वेतन वाले देशों में ले जाने से व्यापार और पूंजी के प्रवाह की दिशा ही बदल गई।
- इससे भारत तथा चीन की अर्थव्यवस्थाओं में भारी बदलाव आये।
- इसके साथ ही दुनिया का आर्थिक भूगोल ही बदल गया।

4. खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के प्रभाव को दर्शाने के लिए इतिहास से दो उदाहरण दें।

उत्तर : उदाहरण – 1 वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था

- 1890 तक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था आ चुकी थी।
- अब श्रम, पूंजी तथ तकनीक में काफी बदलाव आ चुके थे।
- अब खाद्य पदार्थ किसी आसपास के गांव या कस्बे से नहीं बल्कि हजारों मील दूर से आने लगा था।
- अब खुद किसान भी खाद्य पदार्थ पैदा नहीं कर रहे थे।

- यह काम अब औद्योगिक मजदूर करने लगे थे जो संभवत: अभी हाल ही में वहां आये थे और इन खेतों में लगभग एक पीढ़ी पहले ही ठेठ जंगल खड़े थे।
- खाद्य पदार्थों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए रेलवे का इस्तेमाल किया जाता था।
- इसके लिए रेलवे का नेटवर्क बिछाया गया।
- फिर एक देश से दूसरे देश में पहुंचाने के लिए पानी के जहाजों का प्रयोग किया जाता था।
- तेज चलने वाली रेलगाड़ियां बनाई गई तथा जलपोतों का आकार बढ़ाया गया।

- जिससे कृषि उत्पादों को खेतों से दूर के बाजारों में कम लागत पर व आसानी से पहुंचाया जा सके।

उदाहरण – 2 माँस का निर्यात

- 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को माँस नहीं वरन जिंदा जानवर ही भेजे जाते थे जिन्हें यूरोप में ले जाकर ही काटा जाता था।
- ये जिंदा जानवर जहाजों में बहुत ज्यादा जगह घेरते थे।
- बहुत सारे तो लंबे सफर में ही मर जाते थे या बीमार पड़ जाते थे।
- बहुतों का वजन गिर जाता था या वे खाने लायक नहीं रह पाते थे।

- अत: माँस खाना एक महंगा सौदा था जो यूरोप के गरीबों की पहुंच से बाहर था।
- नई तकनीक आने पर पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेटर लगा दिये गए जिससे लंबी यात्रा में भी चीजें खराब नहीं होती थीं।
- इसके बाद तो जानवरों को यात्रा से पहले ही मारा जाने लगा।
- अमेरिका, न्यूजीलैंड तथा अन्य सब जगह से अब जानवरों के स्थान पर उनका माँस ही यूरोप भेजा जाने लगा।

- इससे समुद्री यात्रा का खर्चा कम हो गया जिससे यूरोप में माँस के दाम गिर गये।
- इससे यूरोप के गरीबों को भी माँस उपलब्ध हो गया।
- पहले उनके पास सिर्फ आलू और ब्रेड होते थे। अब बहुत सारे लोगों के भोजन में माँसाहार भी शामिल हो गया।

5. ब्रेटन-वुड्स समझौते का क्या अर्थ है ?

उत्तर : युद्धों के बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था बनाये रखने का उद्देश्य रखा गया।

इसके अन्तर्गत औद्योगिक विश्व ने अपने 2 लक्ष्य निर्धारित किये –

1. आर्थिक स्थिरता तथा
2. पूर्ण रोजगार बनाये रखना

- इसके लिए – जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू-हैम्पशर में ब्रेटन-वुड्स नामक स्थान पर – 'संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन' का आयोजन किया गया।
- इस सम्मेलन में 2 संस्थाओं की स्थापना की गई।
- सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ या हानि से निपटारा करने के लिए – 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (I.M.F.) की स्थापना की गई। (International Monetary Fund)

- युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए पैसे के इंतजाम के लिए –
  'अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक' अथवा 'विश्व बैंक' का गठन किया गया।
- इन I.M.F. तथा विश्व बैंक को 'ब्रेटन–वुड्ज संस्थान' या 'ब्रेटन–वुड्ज टिवन' भी कहा जाता है।
- अत: इस प्रकार से औद्योगिक देशों की जरूरतों को पूरा करने के लिए इन संस्थानों का गठन किया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

